"कपड़ो के रख–रखाव"
"Care of clothes"
Class : B.A . III, Paper- V
Class : B.A. II Subsidiary

हमारी थोड़ी सी लापरवाही के कारण बहुत से वस्त्र पहनने लायक नहीं रह पाते हैं जैसे – अनुचित विधि से धोने के कारण, अत्यधिक धूप सुखाने से, कपड़े की गंदा ही संग्रहीत कर देने के कारण या समुचित स्थान पर नहीं रखने के कारण और भी बहुत से कारण है। वस्त्रों की उचित देख–रेख एवं सुरक्षा कपड़ों की उम्र को लम्बी तो कर ही देती है साथ ही धन का अपव्यय भी नहीं होता है। वस्त्रों की उचित सुरक्षा एवं विधिवत संरक्षण का ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है। वस्त्रों की सुरक्षा, देख–रेख, उचित संरक्षण तथा समुचित संचयन इत्यादि पर उतना ही ध्यान देना आवश्यक है। जितना हम चाहते हैं कि हमारा व्यक्तित्व एवं प्रभावशाली दिखाई दे। वस्त्रों को कुछ समय विश्राम देकर भी उनकी कार्यक्षमता में वृद्धि की जा सकती है Tortora का सुझाव है कि :–

Textile products will wear longer if given chance to rest between uses, Rotating items in use, either clothing or house hold Textiles, will provide the rest period.

डचित देख–रेख, संरक्षण के कारण हम साधारण वस्त्रो की चमक, आकर्षकट्ट रंग को बरकरार रख सकते हैं। वस्त्रों की मरम्मत करना, सफाई करना, सही ढंग से रखना, समय–समय पर धूप और हवा दिखाना इत्यादि और भी बातों से वस्त्रों का जीवन बढ़ जाता है। स्टेला सौन्राज ने लिखा है :–

The greater the care we take of it, the longer it will last and the better it will care.

"वस्त्रों की समुचित देख–रेख के लिए निम्नलिखित सभी विन्दुओं पर ध्यान देना आवश्यक है :–

(1) ब्रश करना तथा धूप–हवा दिखाना (Brushing and Airing) - कुछ वस्त्र ऐसे होते हैं जिन्हें हम प्रतिदिन धो नहीं सकते हैं किन्तु वैसे वस्त्रों पर डस्ट पार्टिक्लिस लगे ही होते हैं अतः वैसे वस्त्र को पहनते समय ब्रश की सहायता से झाड़ना चाहिए। वस्त्र को बराबर धूल कणों एवं अशुद्धियों से मुक्त रखने पर वस्त्र की चमक बढ़ जाती है। ब्रश वस्त्रों के अनुकूल ही होने चाहिए। रेशमी तथा ऊनी वस्त्र बहुमूल्य होते हैं अतः उनकी सुरक्षा भी इसी प्रकार की जानी चाहिए। फिर भी पहने हुए वस्त्र को खोलकर तह कर नहीं रखना चाहिए ताकि उस पर चारों तरफ हवा लग सके सभी प्रकार के वस्त्रों को धूप और हवा दिखाना भी काफी जरूरी होता है, इससे वस्त्रों की रक्षा की जा सकती है।

(2) स्वच्छ संचयन (Clear storage) :– सभी प्रकार के वस्त्रों को जब कुछ समय के लिए रखना हो तो उसे अच्छी तरह से आलमारी या सेल्फ सहेज कर रख देना चाहिए या हैंगर का भी प्रयोग करना चाहिए। गंदे वस्त्र और साफ वस्त्र को एक साथ, एक जगह नहीं रखना चाहिए नही तो गंदे वस्त्र के पसीने की गंध साफ वस्त्रों को खराब कर देगी। कपड़ों को रखने के पूर्व गंदे कपड़ों को स्वच्छ करना चाहिए दाग धब्बों को छुड़ा देना चाहिए दाग धब्बों पर फंफुदी लगने का भय बना रहता है तथा पुराना दाग धब्बा जल्दी छुटता भी नहीं है। स्वच्छ कपड़ों को अच्छी तरह

धूप दिखाकर पालिथिन में डालकर रखना चाहिए। गर्म कपड़ों या ऐसे वस्त्र जिन्हें लंबे समय तक के लिए संचयन करना है वैसे वस्त्र को अच्छी तरह साफ करके धूप में अच्छी तरह सुखा देना चाहिए आलमारी या बक्से की भी सफाई अच्छी तरह करनी चाहिए तथा नेप्थलिन बॉल को उसमें डाल देनी चाहिए कीड़े मारने अन्य पाउडर या स्प्रे का भी प्रयोग भी किया जा सकता है। नीम के पत्ते का प्रयोग करने पर कीड़े से बचाव किया जा सकता है।

(3) शीघ्र मरम्मत करना (Immediate Repairing) —: वस्त्रों का प्रयोग करने के बाद कभी–कभी उसकी सिलाईयाँ शीघ्र खुल जाती है या बटन इत्यादि टूट जाते हैं वैसे वस्त्रों की सिलाई या मरम्मत तुरन्त कर देनी चाहिए। तुरन्त मरम्मत करने से समय और श्रम तो बचता ही है साथ ही पैसों की भी वचत होती कि नये वस्त्र तुरन्त नहीं खरीदने होते हैं ऊनी वस्त्रों के फंदे कहीं–कहीं से टूट जाते हैं यदि तुरन्त मरम्मत नहीं किया गया तो लेडर बढ़ते जायेंगे। अतः प्रत्येक सप्ताह वस्त्रों की मरम्मत, टूटे हुए बटन, फैली हुई कामज को छोटा करने का कार्य कर देना चाहिए।

(4) दाग–धब्बे हटाना (Stain removal) —: प्रायः पहनने वाले वस्त्र पर खाने–पीने की नीचे या अन्य दाग–धब्बे लग जाते हैं अतः इन दाग–धब्कों को तुरन्त छुड़ा देना चाहिए क्योंकि ताजे दाग–धब्बे शीघ्रता से छुट जाते हैं। एक ही प्रकार के धब्बे अलग–अलग तंतु के वस्त्र पर अलग–अलग तरीके से घुटते हैं। दाग छुड़ाने के लिए अम्ल, क्षार एवं पानी का प्रयोग किया जाता है। कभी–कभी अवशोषी पदार्थ का प्रयोग किया जाता है इस पदार्थ का प्रयोग विशेष प्रकार के दाग –धब्बों के लिए ही किया जाता

है इसके लिए समुचित जानकारी होना अतिआवश्यक है। अम्ल या क्षार का प्रयोग करना हो तो इसके लिए तनु घोल या हल्का घोल तैयार करना चाहिए। प्रायः देखा जाता है एसिड के प्रयोग करने से कपड़े गल जाते हैं अतः इसका प्रयोग अनिवार्य हो तो ही प्रयोग करना चाहिए। प्रयोग करने के बाद कपड़े को बार–बार पानी से धोना चाहिए यानि न्यूट्रीलाइज (उदासी कर) कर देना चाहिए। इसके बाद ही पूरे वस्त्र को धोना या ड्राईक्लीन करना चाहिए।

(5) नियमित धुलाई (Frequent Laundering) —: पहनने वाले कपड़े या प्रयोग में आने वाले कपड़ों को बराबर धुलाई करनी पड़ती है क्योंकि वातावरण की गंदगी या पड़ने वाले धुल कण तथा त्वचा से निकलने वाली गंदगी वस्त्रों को दूषित कर देती है टारटोरा का सुझाव है कि — Soil removal is therefore one of the most important aspects of caring for fabrics धूल कण कुछ घुलनशील होाते हैं और कुछ अघुलनशील होते हैं। घुलनशील गंदगी को निकाल देता है परन्तु कुछ अघुलनशील जैसे तेल चिकनई या धब्बे बिा किसी डिटरजेंट की सहायता के बिना नहीं निकलते हैं। अतः बहुत अधिक गंदे होने के पहले ही वस्त्रों की सफाई कर देनी चाहिए। बहुत अधिक गंदे वस्त्रों की सफाई करने से वस्त्रों की संरचना और तेक्सचर क्षतिग्रस्त हो जाता है उनका रंग भी बदरंग हो जाता है और कभी–कभी फट भी जाता है। यानि अत्यधिक गंदे वस्त्र की सफाई की कार्य क्षमता कम हो जाती है। अतः नित्य प्रयोग के बाद वस्त्र को धो ही डालना चाहिए ऐसा करने से वस्त्र की कार्य क्षमता एवं वस्त्र का जीवन दोनों लम्बे

होते हैं तथा धुलाई सामग्री का खर्च भी कम होता है। साथ ही साथ श्रम और समय भी कम लगता है।

(6) धुलाई की उचित विधि (Appropriate Laundering Procedure) —: अधिकांश वस्त्रों की धुलाई घर पर ही करनी पड़ती है घर पर धोये गये वस्त्रों के लिए अच्छे तरह के डिटरजेंट का प्रयोग करते हैं तथा सावधानी पूर्वक धोते तथा सुखाते हैं जिससे वस्त्र की जीवन लम्बा हो जाता है अतः सभी व्यक्तियों के लिए वस्त्रां की धुलाई का समुचित ज्ञान होना आवश्यक है। गंदे वस्त्र, भारी वस्त्र, ... तथा रंगीन वस्त्र को विभिन्न प्रकार के रेशों से बने वस्त्रों को धोने की विधियाँ अलग–अलग है। अनुचित विधि से धोने से वस्त्र नष्ट हो सकते हैं उनका रंग या आकार भी खराब हो जाता है। वस्त्र की धुलाई की उचित विधि, छँटाई वाशिंग टाईम, पानी का ताप, दाग–धब्बे छुड़ाने की विधि, धुलाई की उचित सामग्री के चुनाव के संदर्भ में सही निर्णय लेना आवश्यक है। धोने से पूर्व वस्त्रों की मरम्मत कर देनी चाहिए। उसके बाद धुलाई के समय वस्त्रों की प्रकार के अनुसार गंदगी की मात्रा के अनुसार तथा रंग के अनुसार छँटाई कर लेनी चाहिए। कपड़ों की मोटाई के अनुसार तथा श्वेत वस्त्रों को भी अलग कर लेनी चाहिए। वस्त्रों की छँटाई के बाद उन्हें विधिपूर्वक धोना चाहिए कुछ वस्त्रों को भट्ठी पर देना होता है कुछ वस्त्र हल्के हाथ से भी धुल जाता है तथा बहुत से वस्त्रों को ड्राई क्लीनिंग की भी आवश्यकता होती है इससे वस्त्र का जीवन तो बढ़ता ही है उसका स्वभाविक एवं मौलिक सौन्दर्य बना रहता है पहनने वाले व्यक्ति को भी अच्छा प्रतीत होता है।

(8) विधिपूर्वक सुखना (Appropriate Drying) —: कपड़ों को धूप में सुखाना सबसे श्रेष्ठ तरीका है श्वेत वस्त्रों की चमक बढ़ जाती है किन्तु प्रिन्टेड या रंगीन कपड़ों को सीधी धूप से बचाना जरूरी है सिल्क के वस्त्र को तीखी धूप में सुखाना उचित नहीं होता है। ऊनी कपड़ों को धूप में डालने पर ऊपर से महीन कपड़ा डाल देना चाहिए ऊनी कपड़ों को चौरस स्थान पर ही सुखना चाहिए ऊनी वस्त्र को अच्छी तरह से सुखा देनी चाहिए नही तो नमी वस्त्र में रह जाये तो हानिकारक प्रभाव छोडते हैं रंगीन तथा सिंथ्रेटिक कपड़ों में भी धूप सहन करने की क्षमता कम होती है धूप में सुखते हुए कपड़ों को निरन्तर कुछ देर पर उल्ट देना चाहिए। धूप के अतिरिक्त ऑटोमेटिक ड्रायर में भी कपड़ों को सुखाया जाता है (इसमें समय और ताप की सेटिंग भी रहती है कपड़ों की जरूरत के अनुसार) हीट सेन्सेटिव से कपड़ों में संकुचन हो सकता है तथा इलास्टिंग भी खराब हो जा सकती है इसलिए कपड़ों के लेबुल को देखकर ही ड्रायर का प्रयोग करना चाहिए।

(9) विधिपूर्वक इस्तरी करना (Proper pressing and ironing) —: उचित विधि से कपड़ों पर आयरन करना आवश्यक है। रासायनिक कपड़ों पर अधिक गर्म आयरन से कपड़े जल सकते हैं ऊनी कपड़ों पर गर्म आयरन खराबी पहुँचाते हैं। रेशमी वस्त्रो के रेशे अत्यन्त

कोमल होते हैं उन पर भी उल्टी तरफ से बिल्कुल हल्का गर्म आयरन करना चाहिए इससे मौलिक सौन्दर्य भी नष्ट नहीं होता है।

Madhurima Mishra
Dept. Home Science
Mahila College, Dalmianagar